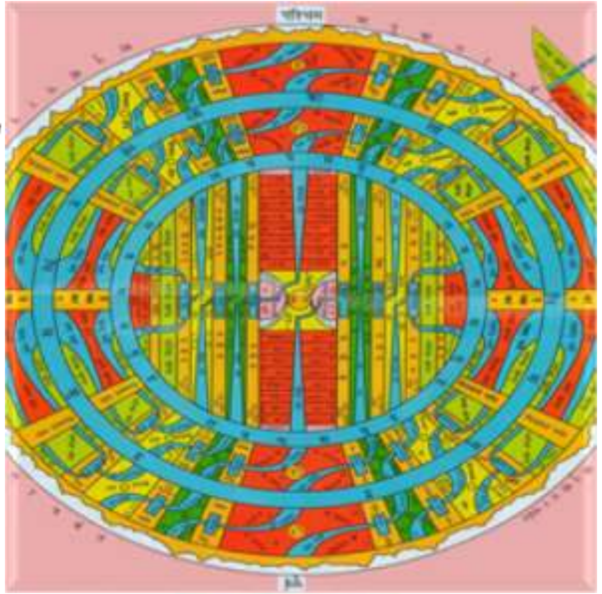

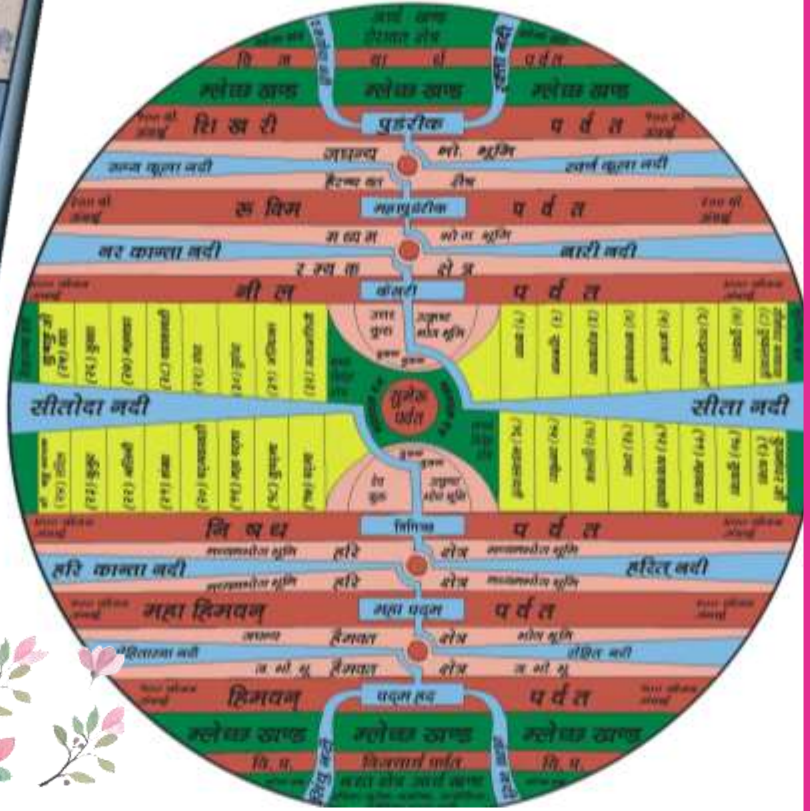

तत्त्वार्थसूत्र अध्याय 3 अधोलोक

PRESENTATION DEVELOPED BY:

SMT SARIKA CHABRA

मंगलाचरण

❀मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म भूभृताम् ।
❀ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुण लब्धये ।।

जैन भूगोल क्यों समझे ?

- जीव तत्त्व को विशेष जानने के लिये
- तीन लोक की विशालता को समझने के लिये
- संसार परिभ्रमण अर्थात् 5 परावर्तन को समझने के लिये
- केवलज्ञान के माहात्म्य जानने के लिये
- 4 गतियों के ज्ञान के लिये
- सर्वज्ञपने के दृढ़ श्रद्धान के लिये

तीन लोक

ऊर्ध्व लोक

मध्य लोक

अधोलोक

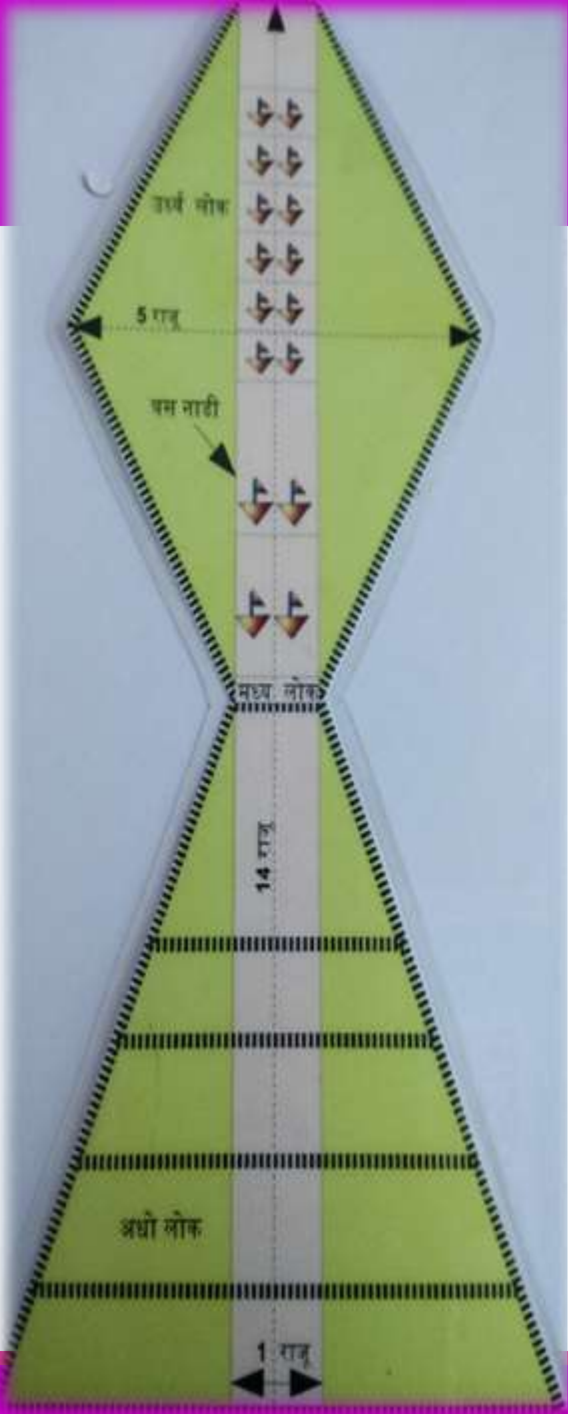

लोकाकाश

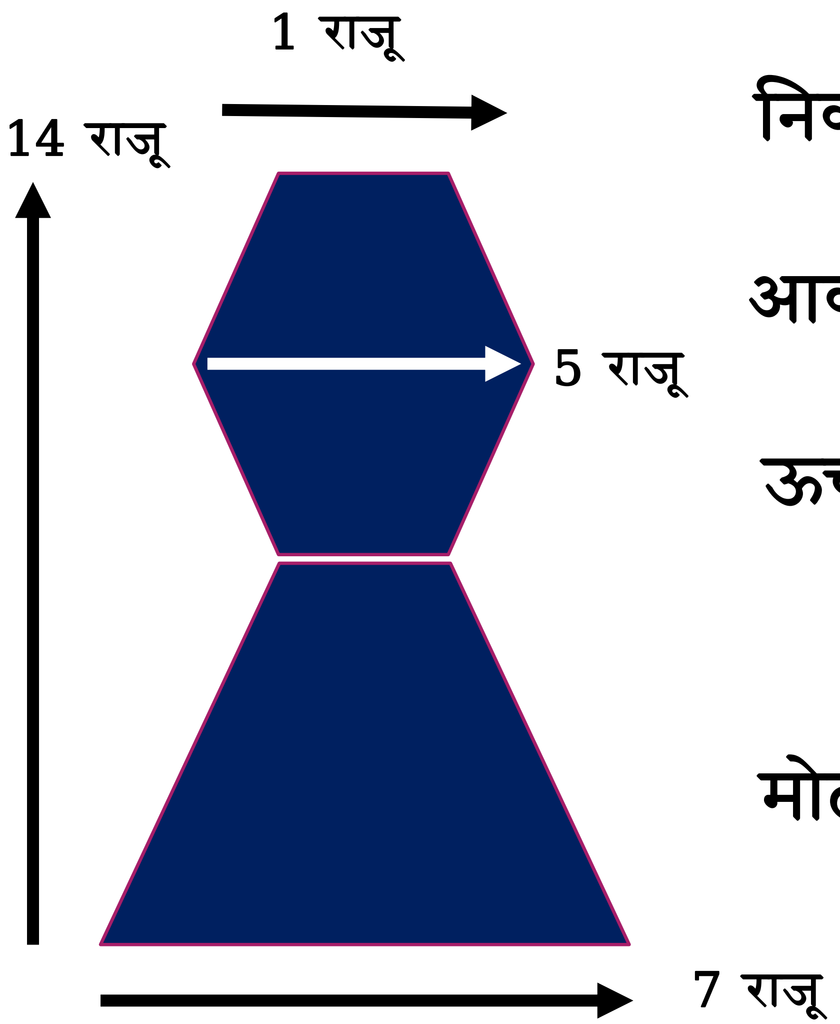

स्थिति
- अलोकाकाश के मध्य में

निवास
- छहों द्रव्य

आकार
- पुरुषाकार, डेढ़ मृदंग का

ऊचाई
- 14 राजू

मोटाई
- 7 राजू उत्तर दक्षिण दिशा में
- पूर्व पश्चिम दिशा में
- मूल में

चौड़ाई	• अधोलोक में (7 राजू) • मध्य में (1 राजू) • ब्रह्म स्वर्ग में (ऊर्ध्व लोक में मध्य में, 5 राजू) • लोक के अन्त में (1 राजू)
औसत चौड़ाई	• 3.5 राजू
लोक का घनफल	• 343 घनराजू (14 × 7 × 3.5)

विशेष

- 1 राजू = असंख्यात योजन
- 1 योजन = 4000 मील (प्रमाण योजन)
  - 1 योजन = 4 कोस
  - 1 कोस = 2 मील
  - 1 मील = ~1.5 कि. मी.
  - याने 1 योजन में 4×2×1.5 कि. मी. = 12 कि. मी.
- फिर प्रमाण योजन लाने के लिए 12 कि. मी.×500 = 6000 कि. मी.
- 1 योजन = 6000 कि.मी.

त्रस नाड़ी

त्रसजीव (द्वीन्द्रियादिक), त्रसनाड़ी में ही होते हैं बाहर नहीं होते ।

स्थिति	लोक के बिल्कुल मध्य में
ऊचाई	कुछ कम 13 राजू
लम्बाई	1 राजू
चौड़ाई	1 राजू
घनफल	कुछ कम 13 घन राजू
आकार	ट्यूब लाईट का खोखा

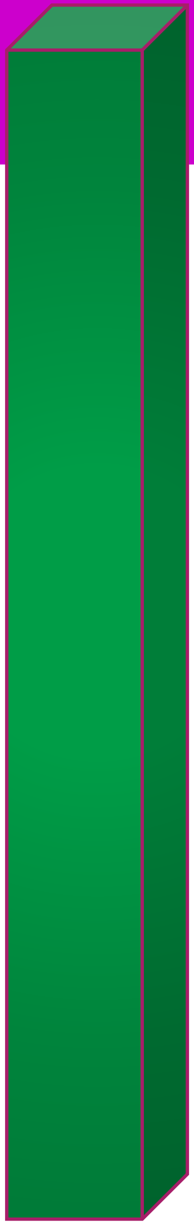

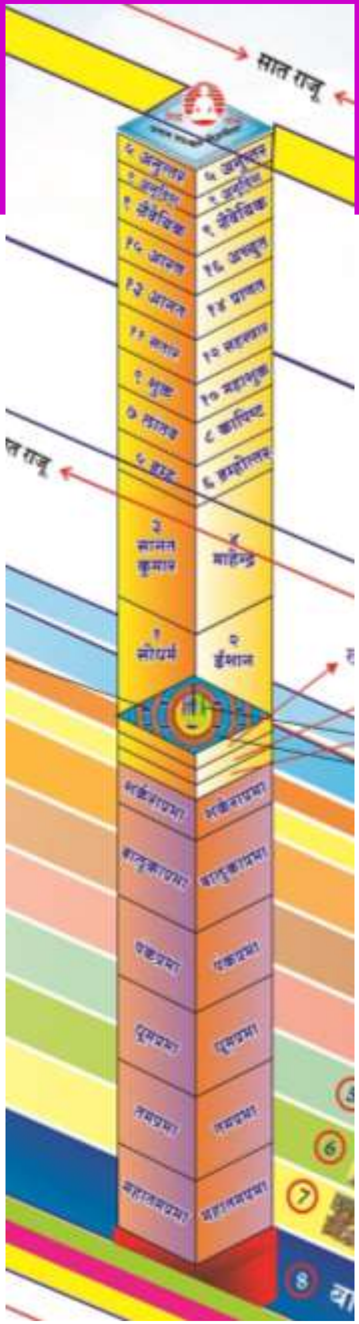

लोक के चारों ओर 3 वलय हैं

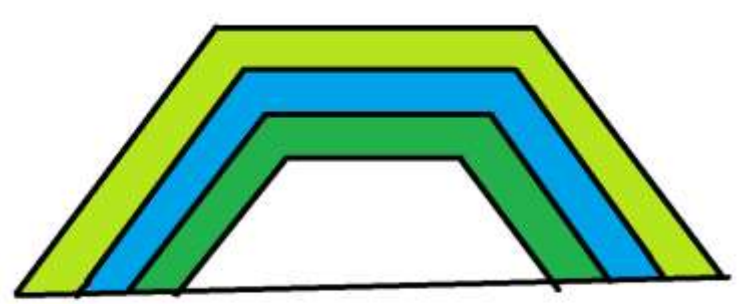

लोक का आधार	घनोदधि वातवलय	ठोस वायु + जल का घेरा	= वाष्प
घनोदधि वातवलय का आधार	घनवात वातवलय	ठोस वायु का घेरा	= मोटी हवा
घनवात वातवलय का आधार	तनुवात वातवलय	पतली वायु का घेरा	= पतली हवा
तनुवात वातवलय का आधार	आकाश		

अधोलोक की सातों पृथ्वियां घनोदधि वातवलय के आधार से स्थित हैं

अधोलोक

स्थिति — मेरु की जड़ से नीचे

निवास — सम्पूर्ण नारकी, भवनवासी एवं व्यंतर देव, एकेन्द्रिय तिर्यंच

आकार — अर्द्धमृदंग

पृथ्वियाँ — 7

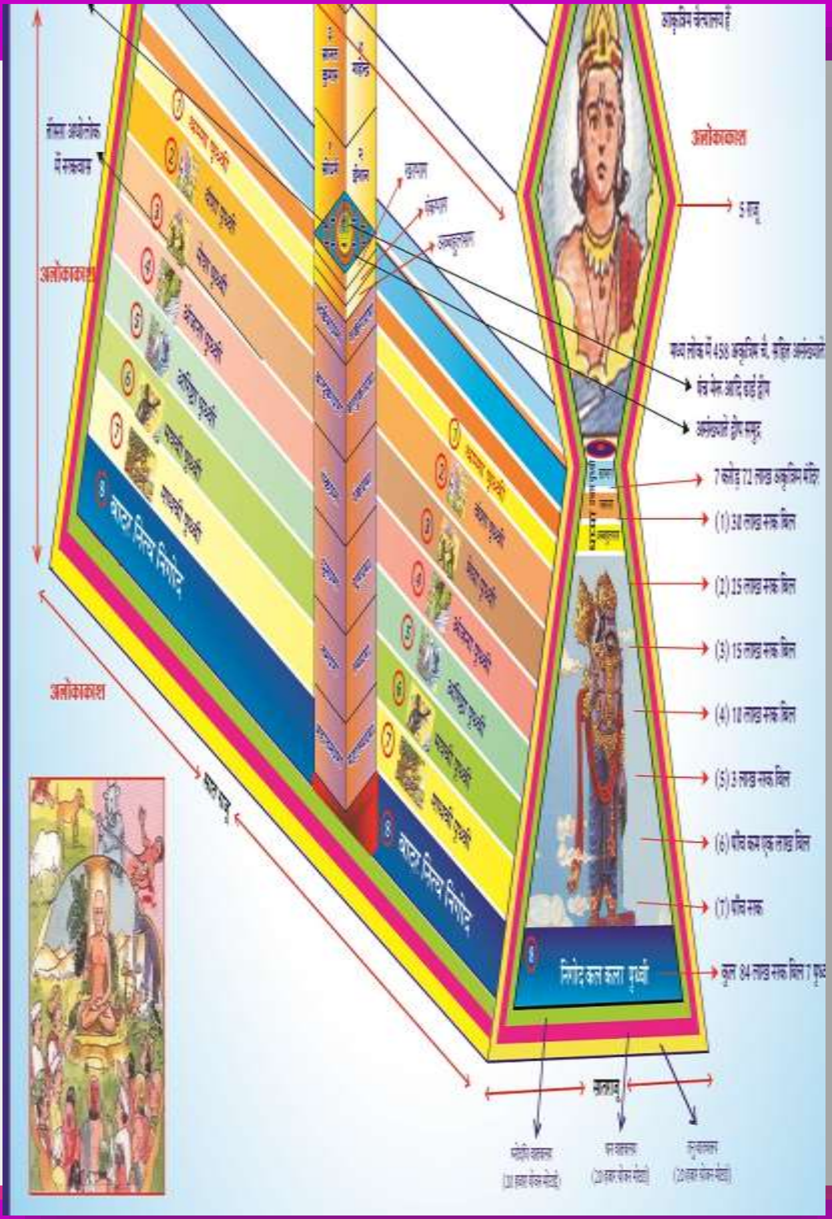

अधोलोक

ऊचाई	• 7 राजू
मोटाई	• 7 राजू उत्तर दक्षिण दिशा में • पूर्व पश्चिम दिशा में
चौड़ाई	• मूल में 7 राजू • मध्य में 1 राजू
औसत चौड़ाई	• 7+1 = 8/2 = 4 राजू
अधोलोक का घनफल	• 196 घनराजू (7×7×4)

www.Jainkosh.org

रत्नशर्कराबालुकापंकधूमतमोमहातमः प्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ।।1।।

❀रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा, महातमप्रभा – ये सात भूमिया घनाम्बुवात और आकाश के सहारे स्थित है तथा क्रम से नीचे-नीचे हैं ।

7 नरक

रत्नप्रभा

शर्कराप्रभा

बालुकाप्रभा

पंकप्रभा

धूमप्रभा

तमप्रभा

महातमप्रभा

नारकी किसे कहते हैं ?

नारकी के पर्यायवाची — नारत, नरक, निरय, निरत

ना+रत = स्वयं अथवा परस्पर प्रीति को प्राप्त नहीं होते

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में परस्पर रमते नहीं

नरक — नरान् = प्राणियों को, कायन्ति = क्लेश पहुचावें

निरय — जिनका पुण्यकर्म चला गया है

निरत — जो हिंसादि असमीचीन कार्यों में रत हैं

रत्नप्रभा पृथ्वी के 3 भाग हैं

खर भाग

16000 योजन

14000 योजन में 7 प्रकार के व्यंतर देव और 9 प्रकार के भवनवासी देवों का निवास

पंक भाग

84000 योजन

व्यंतर जाति के राक्षस देव और भवनवासी में असुरकुमार देव

अब्बहुल भाग

80000 योजन

78000 योजन में नारकी

तासुत्रिंशत्पंचविंशतिपंचदशदशत्रिपंचोनैकनरक-शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ।।2।।

❀उन भूमियों में क्रम से तीस लाख, पच्चीस लाख, पंद्रह लाख, दस लाख, तीन लाख, पांच कम एक लाख और पाँच नरक हैं ।।2।।

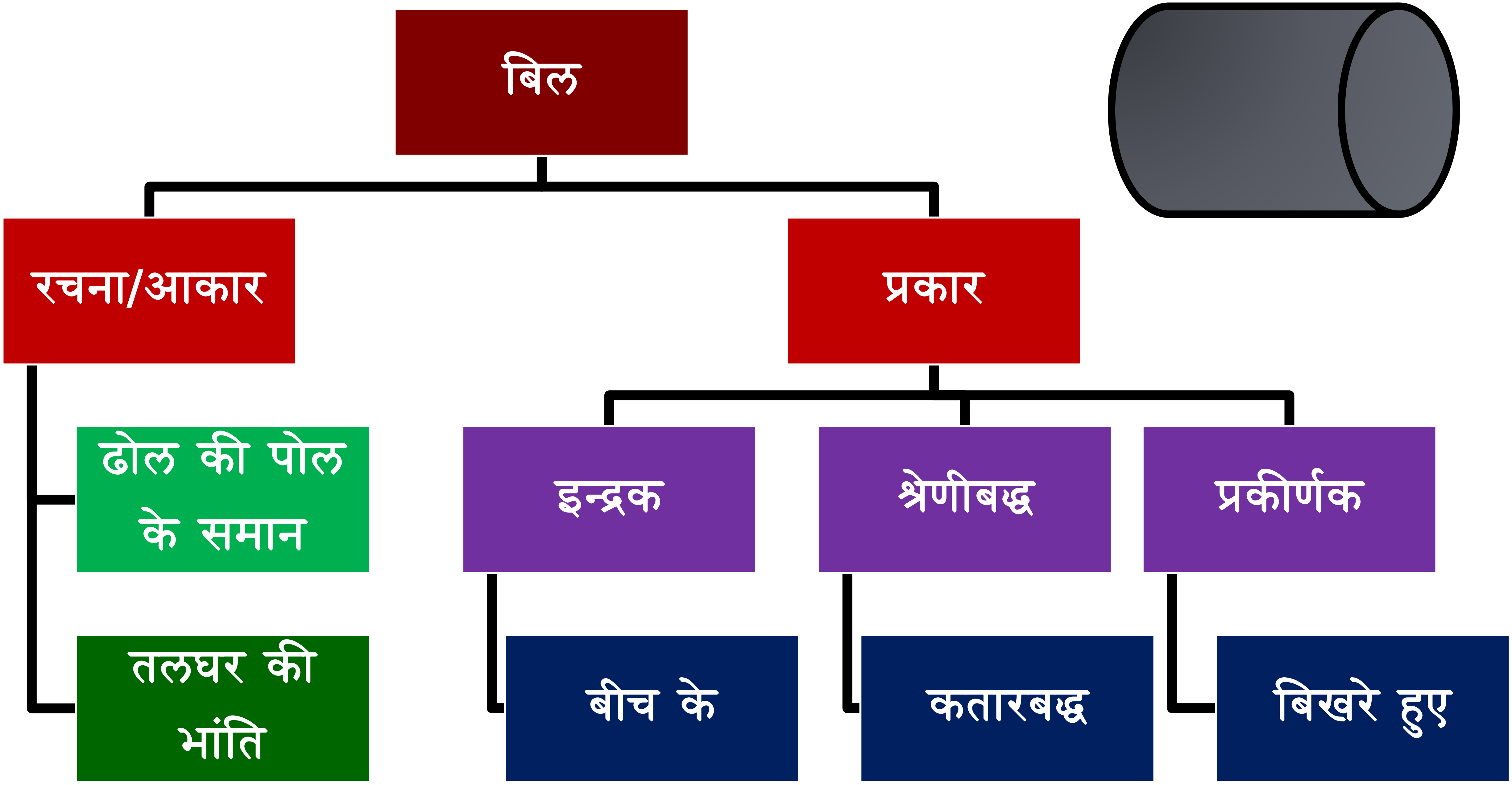
बिल
रचना/आकार
प्रकार
ढोल की पोल के समान
तलघर की भांति
इन्द्रक
श्रेणीबद्ध
प्रकीर्णक
बीच के
कतारबद्ध
बिखरे हुए

नरक बिल

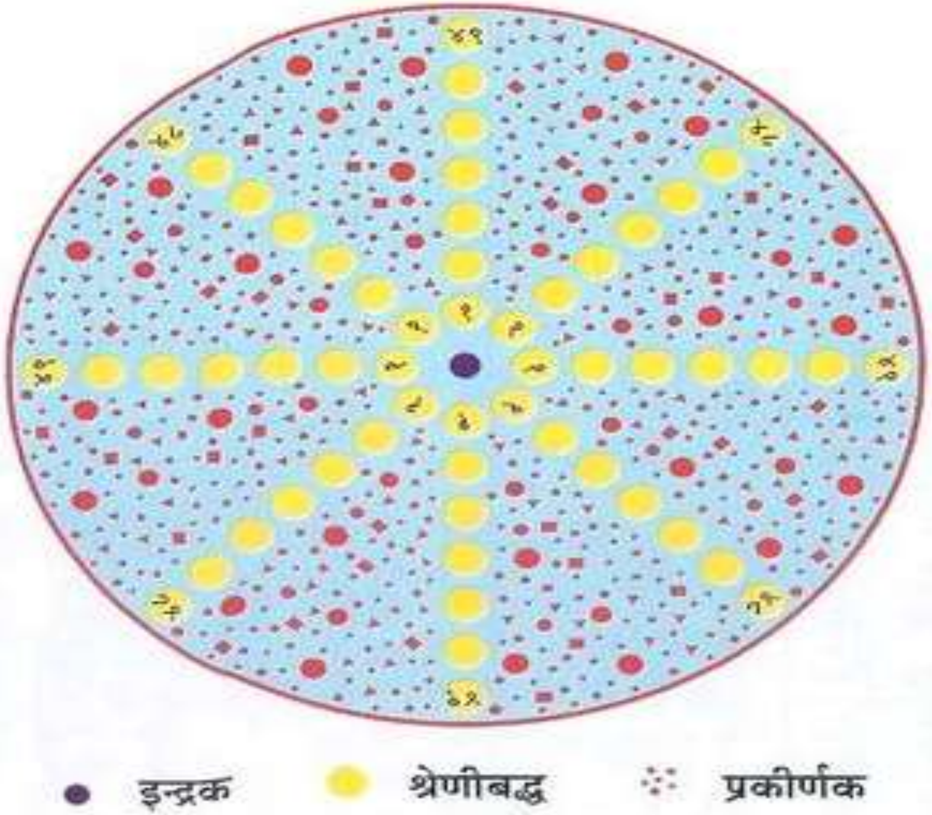

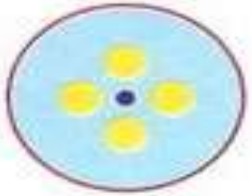
सप्तम नरक

प्रथम नरक का प्रथम पटल

सीमन्तक इन्द्रक – ४५ लाख योजन विस्तार

श्रेणीबद्ध बिल – असंख्यात योजन विस्तार
दिशाओं में ४९, विदिशाओं में ४८

प्रकीर्णक – संख्यात, असंख्यात योजन विस्तार

प्रथम नरक के १३ पटलों के बिल ३० लाख

इन्द्रक		१३
श्रेणीबद्ध	+	४४२०
प्रकीर्णक	+	२९९५५६७
कुल		३००००००

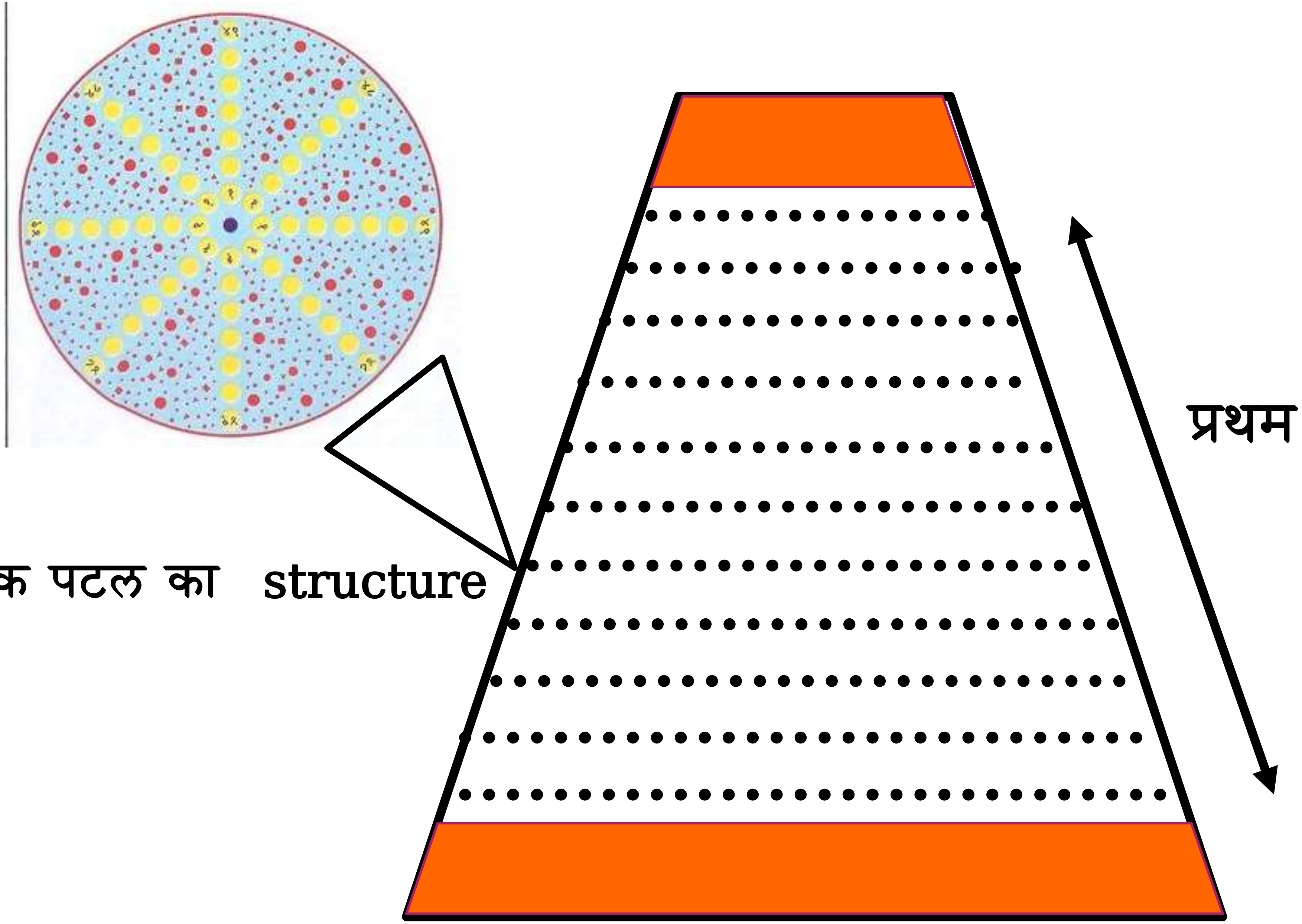
प्रत्येक पटल का structure
प्रथम नरक =13 पटल
रत्नप्रभा पृथ्वी

बिलों की विशेषताएं

ये बिल आपस में जुड़े हुए नहीं रहते हैं, अर्थात् एक बिल का नारकी दूसरे बिल में प्रवेश नहीं कर सकता है ।

बिलों का दरवाजा नहीं होता अर्थात् बिलों से पृथ्वी के ऊपर नहीं जाया जा सकता है ।

बिलों की दीवारें वज्र की बनी होती हैं ।

कौन से नरक में गर्मी/ठण्डी ?

उष्णता

- 1
- 2
- 3
- 4
- 5.75 नरक में

ठण्डी

- 5.25
- 6
- 7 नरक में

नारका नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।।3।।

❁नारकी निरंतर अशुभ लेश्या, परिणाम, देह, वेदना और विक्रिया से युक्त होते हैं ।

लेश्या अशुभतर कैसे ?

तिर्यञ्चों की लेश्या से भी अशुभ

पहले नारकी की अपेक्षा दूसरे नारकी की लेश्या अशुभ

अशुभतर लेश्या

नरक	लेश्या
1	जघन्य कापोत
2	मध्यम कापोत
3	उत्कृष्ट कापोत जघन्य नील
4	मध्यम नील
5	उत्कृष्ट नील जघन्य कृष्ण
6	मध्यम कृष्ण
7	उत्कृष्ट कृष्ण

परिणाम अशुभतर कैसे ?

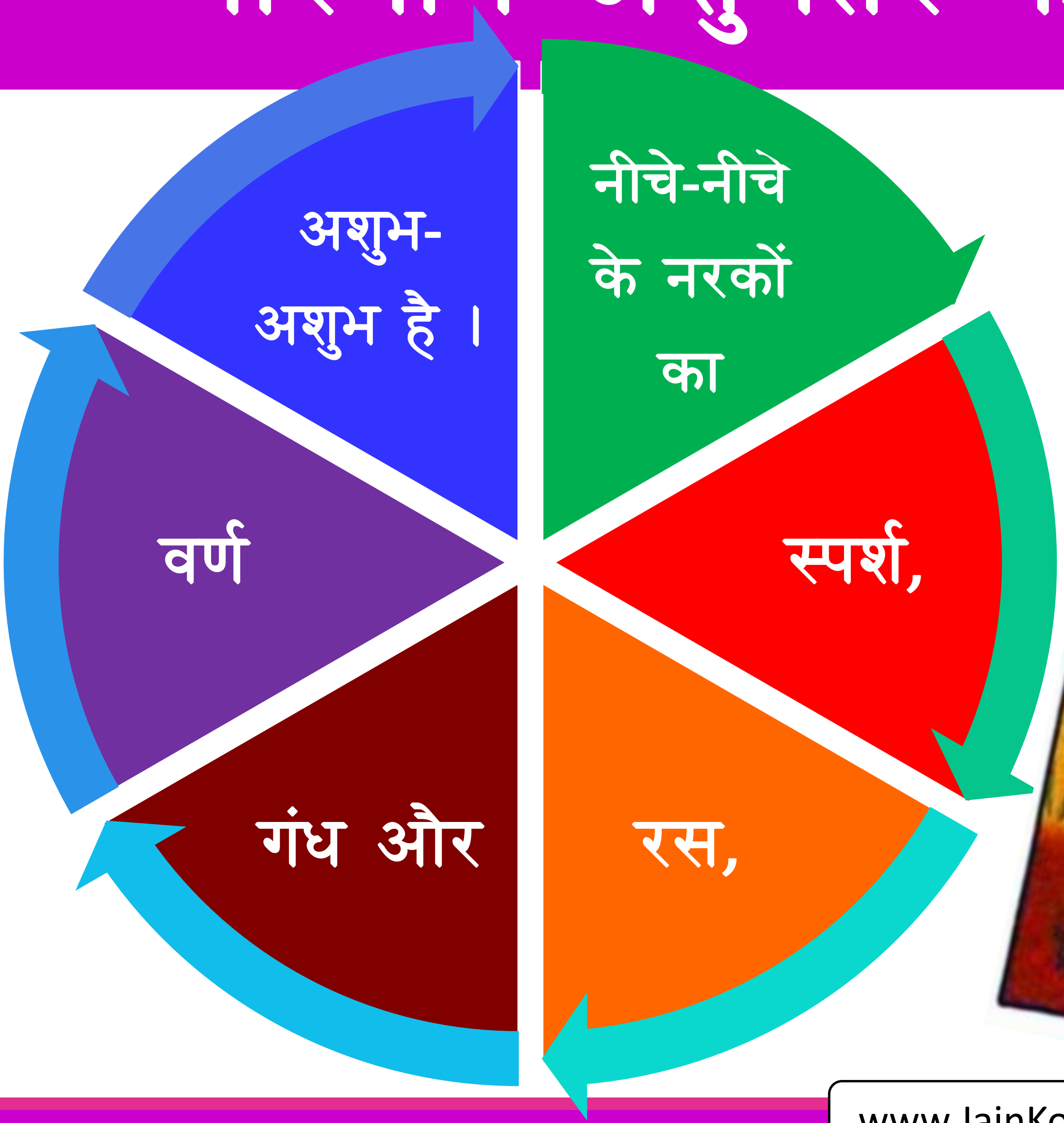

नरक की मिट्टी की दुर्गंध का प्रभाव

नरक	दूरी जहां तक के जीव मर जाते हैं ।
1	1 कोस
2	1.5 कोस
3	2 कोस
4	2.5 कोस
5	3 कोस
6	3.5 कोस
7	4 कोस

देह अशुभतर कैसे ?

हुंडक संस्थान वाला, क्रूर और भयंकर शरीर

इनके शरीर में कड़वी तूमड़ी और काञ्जीर से भी अधिक कटु और अनिष्टकारक रस होता है

बिल्ली आदि के मरे हुए शरीर से भी अधिक दुर्गंधित शरीर

करोंत और गोखरू से भी अधिक दुःस्पर्शित शरीर

5 करोड़, 68 लाख, 99 हजार, 584 रोग सातवें नरक के नारकी के होते हैं ।

वेदना अशुभतर कैसे ?

जन्म के दुःख

नरक में उत्पन्न होने की स्थिति

जन्मते ही तीक्ष्ण शस्त्रों पर उछलते हैं

नरक	कितना उछलते हैं
1 नरक	7.81 योजन ऊचा
2 नरक	15.62 योजन ऊचा
3 नरक	31.25 योजन ऊचा
4 नरक	62.5 योजन ऊचा
5 नरक	125 योजन ऊचा
6 नरक	250 योजन ऊचा
7 नरक	500 योजन ऊचा

परस्परोदीरित दुःखाः ।।4।।

❁सूत्रार्थ — तथा वे परस्पर उत्पन्न किये गये दुःख वाले होते हैं ।।4।।

संक्लिष्टासुरोदीरितदु:खाश्च प्राक् चतुर्थ्या: ।।5।।

❁सूत्रार्थ — और चौथी भूमि से पहले तक वे संक्लिष्ट असुरों द्वारा उत्पन्न किये गये दु:ख वाले भी होते हैं ।।5।

नारकियों के दुःख

- ❁ जन्मते ही औंधे मुख गिरकर उछलना
- ❁* उत्पन्न होते ही कुत्तों की तरह लड़ना
- ❁* परस्पर में निरन्तर दुःख देना
- ❁* अत्यन्त दुर्गन्धित नरक बिलों में रहना
- ❁* अत्यन्त भयानक एवं अनेक रोगों से व्याप्त शरीर होना
- ❁* करोड़ों बिच्छू एक साथ काटने जैसी वेदना
- ❁* निरन्तर मारकाट के भयानक शब्द सुनना
- ❁* शीत उष्ण वेदना
- ❁* भूख प्यास वेदना
- ❁* सेमल वृक्ष एवं वैतरणी नदी की वेदना
- ❁* असुरों द्वारा दुःख देना एवं भिड़ाना
- ❁* तीव्र कषाय की वेदना

तेष्वेक त्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परास्थितिः ।।6।।

❀सूत्रार्थ — उन नरकों में जीवों की उत्कृष्ट स्थिति क्रम से एक, तीन, सात, दस, सत्रह, बाईस और तैतीस सागरोपम हैं ।।6।।

कौन-से नरक की आयु कितनी होती है ?

नरक	उत्कृष्ट सागर
1	1 सागर
2	3 सागर
3	7 सागर
4	10 सागर
5	17 सागर
6	22 सागर
7	33 सागर

नरक गति की प्राप्ति का कारण

बहुत आरंभ

बहुत हिंसादि के परिणाम

बहुत परिग्रह

तीव्र मूर्छा का परिणाम

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: :9406682880
  - www.Jainkosh.org